द्वितीय विश्व युद्ध

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात भविष्य में इस तरह की लड़ाइयों को रोकने के लिए 1919 में राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई थी, परन्तु यह संघ दूसरे विश्व युद्ध को रोकने में नाकाम रहा। इसके फलस्वरूप 20 वर्षों बाद एक बार पुनः युद्ध शुरू हो गया, जिसे द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में जाना जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध के जो परिणाम सामने आये वह प्रथम विश्व युद्ध की अपेक्षा कहीं अधिक प्रलयकारी थे। वर्ष 1939 में दूसरे विश्व युद्ध की शुरुआत यूरोप में हुई थी और यह युद्ध सितंबर 1945 में समाप्त हुआ था।

यह युद्ध मित्र राष्ट्रों तथा धुरी राष्ट्रों के बीच लड़ा गया था। मित्र देशों की अगुवाई अमेरिका, फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन द्वारा किया गया जबकि धुरी शक्तियों का नेतृत्व जर्मनी, इटली और जापान द्वारा किया गया था। इस युद्ध में लगभग लगभग 70 देशों की थल-जल-वायु सेनाएं शामिल थी। इसके साथ ही इस युद्ध में विभिन्न राष्ट्रों के लगभग 10 करोड़ सैनिकों ने भाग लिया था, जिसमें 5 से 7 करोड़ लोगों की जानें गई और 2 करोड़ से अधिक लोग घायल हुए थे। इस विनाशकारी युद्ध में परमाणु बम का भी इस्तेमाल हुआ था, जिसके कारण अनेकों लोग बीमारी और भुखमरी का शिकार हुए। द्वितीय विश्व युद्ध कब और क्यों हुआ था, कारण व परिणाम के बारें में आपको यहाँ विस्तार से जानकारी दे रहे है।

द्वितीय विश्व युद्ध कब शुरू हुआ था (1939-45)

Table of Contents

- द्वितीय विश्व युद्ध कब शुरू हुआ था (1939-45)
- द्वितीय विश्व युद्ध का कारण (Cause of Second World War)
- 1.तानाशाही शक्तियों का जन्म (Birth of Dictatorial Powers)
- 2.साम्राज्यवादी प्रवृत्ति (Imperialist Tendencies)
- 3.यूरोप में गुटों का निर्माण (Forming Groups in Europe)
- 4.हथियार बंदी की होड़ (Arms Race)
- 5.विश्व आर्थिक मंदी का प्रभाव

द्वितीय विश्व युद्ध का कारण (Cause of Second World War)

दूसरा विश्व युद्ध होनें के कारण इस प्रकार है:-

1.तानाशाही शक्तियों का जन्म (Birth of Dictatorial Powers)

पहले विश्व युद्ध के बाद यूरोप मे तानाशाही शक्तियो का जन्म हुआ. जर्मनी में हिटलर और इटली में मुसोलिनीतानाशाह बन बैठे। चूँकि इटली को पेरिस शांति सम्मेलन से कोई खास लाभ नही हुआ. जिसके कारण इटली मे असंतोष की भावना जागृत हो गई और इसी का लाभ उठा कर मुसोलिनी ने फासीवाद की स्थापना कर सारी सत्ता अपने हाथो मे केंद्रित कर ली। जर्मनी में भी हिटलर ने कुछ ऐसा ही किया उसने नाजीवाद की स्थापना की और वह जर्मनी का तानाशाह बन बैठा। दोनों तानाशाह हिटलर और मुसोलिनी ने आक्रामक नीति अपनाते हुए राष्ट्र संघ की सदस्यता त्याग दी. इस प्रकार इनकी आक्रामक नीतियों ने जल्द ही दूसरे विश्व युद्ध के बीज का अंकुरण कर दिया।

2.साम्राज्यवादी प्रवृत्ति (Imperialist Tendencies)

दूसरे विश्व युद्ध का एक मुख्य कारण साम्राज्यवाद भी माना जाता है, उस समय जितनी भी साम्राज्यवादी शक्तिया थी. वह सभी अपनें साम्राज्य का और अधिक विस्तार करनें में लग गयी. जिससे साम्राज्यवादी राष्ट्र में आगे निकलनें की होड़ लग गयी इसका परिणाम यह हुआ कि 1930 के दशक में आक्रामक कार्यवाहियां निरन्तर बढ़ती चली गई. वर्ष 1931 मे जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया और मंचूरिया पर आधिपत्य स्थापित कर लिया. इसी तरह 1935 में इटली ने इथोपिया पर और इसी तरह जर्मनी ने राइनलैंड पर और 1938 में ऑस्ट्रिया पर आक्रमण कर जर्मन साम्राज्य मे शामिल कर लिया.

3.यूरोप में गुटों का निर्माण (Forming Groups in Europe)

जर्मनी की शक्तियों में निरंतर विस्तार होता जा रहा था इसे देखते हुए यूरोपीय राष्ट्र अपनी सुरक्षा के लिए गुटों का निर्माण करने लगे फ्रांस ने इसकी शुरुआत करते हुए जर्मनी के इर्द-गिर्द के राष्ट्रों का एक जर्मन विरोधी गुट बनाया और इसके विरोध में जर्मनी और इटली ने एक अलग गुट बनाया जिसमें जापान भी शामिल हो गया।

इस तरह जर्मनी, इटली और जापान का त्रिगुट का निर्माण हुआ और यह राष्ट्र धुरी राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार फ्रांस, इंग्लैंड, अमरिका और सोवियत संघ का अलग ग्रुप बना जो मित्र राष्ट्र के नाम से विख्यात हुए। इस प्रकार गुटों के निर्माण से एक दूसरे के विरुद्ध घृणा और विद्वेष की भावना जागृत हो गयी।

4.हथियार बंदी की होड (Arms Race)

पहले विश्व युद्ध के बाद साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा और राष्ट्र ग्रुप के निर्माण ने फिर से हथियार बंदी की होड शुरू कर दी। जर्मन आक्रमण को फ्रांस की सीमा पर रोकने के लिए फ्रांस ने अपनी सीमा पर मैगिनो लाइन का निर्माण किया और भूमिगत किलाबंदी कर दी। इसके जवाब में जर्मनी ने अपनी पश्चिमी सीमा को मजबूत करने के लिए सीजफ्रेड लाइन बनाई। इस तरह की गतिविधियों ने युद्ध को और हवा दे दी।

5.विश्व आर्थिक मंदी का प्रभाव

द्वितीय विश्वयुद्ध में 1929-30 की विश्व आर्थिक मंदी का भी विशेष योगदान रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि उत्पादन घट गया और बेरोजगारी और भुखमरी बढती गई। कृषि व्यापार और उद्योग धंधे बुरी तरह से प्रभावित हो गये। इसमें सबसे बुरी स्थिति जर्मनी कि थी। वर्साय की संधि को उत्तरदाई बताते हुए हिटलर ने इसका लाभ उठाया और वह तानाशाह बन बैठा।

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम (The Results of Second World War)

1.धन जन की भीषण हानि (Huge Loss of Money)

पहले विश्व युद्ध की तुलना में दूसरे विश्व युद्ध में जन और धन की बहुत अधिक क्षति हुई। इस युद्ध में अनुमानतः दोनों पक्षों के 7 करोड से अधिक लोग मारे गए और लाखों कि सख्या मे लोग बेघर हो गये। जिससे इससे पुनर्वास की बड़ी समस्या खड़ी हो गयी। हिरोशिमा और नागासाकीपरमाणु बम के हमले से पूरी तरह से नष्ट हो गये। यहाँ तक कि इस युद्ध में लाखों यहूदियों की हत्या कर दी गई. घायलों की गिनती ही नहीं की जा सकती थी। इस प्रकार इतना विनाशकारी युद्ध पहले कभी नहीं हुआ था।

2.अमेरिका और सोवियत संघ की शक्ति में वृद्धि (Increase in Power of America and Soviet Union)

दूसरे विश्व युद्ध के बाद फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड और इटली के स्थान पर सोवियत संघ और अमेरिका का प्रभावविश्व कि राजनीति में बढता गया। इन्हीं दोनो देशों के इर्द-गिर्द युद्धोत्तर राजनीतिक घूमने लगी।

3.साम्यवाद का तेजी से प्रसार (Rapid Spread of Communism)

दूसरे विश्व उदध के बाद सोवियत संघ की अगुवाई में साम्यवाद बहुत ही तीव गति से फैलता चला गया। साम्यवाद के प्रसार से फासीवादी और सामाज्यवादी शक्तियों की कमर टूट गई. वह पुनः सिर उठाने लायक नहीं रहे।

4.जर्मनी का विघटन (Disintegration of Germany)

दूसरे विश्व युद्ध के बाद जर्मनी को दो भागो पश्चिमी जर्मनी और पूर्वी जर्मनी में विभाजित कर दिया गया। पश्चिमी जर्मनी को इंग्लैंड अमेरिका और फ्रांस तथा पूर्वी जर्मनी को सोवियत संघ के संरक्षण में रखा गया। बर्लिन की दीवार बनाकर इसका विभाजन किया गया। विगत वर्षो में जर्मनी का पुनः एकीकरण कर बर्लिन की दीवार तोड दी गई है. तथा जर्मनी पर से विदेशी आधिपत्य समाप्त कर

5.संयुक्त राष्ट्र की स्थापना (United Nations Establishment)

दूसरे विश्व युद्ध के बाद एक बार फिर से एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता महसूस हुई ताकि वैश्विक शांति बनाये रखने के साथ ही विश्व युद्ध की पुनरावृति को रोका जा सके। इस प्रकार अमेरिका की अगुवाई में 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र नामक संस्था की स्थापना की गई।

6.वैज्ञानिक स्तर पर प्रगति (Scientific Progress)

वैज्ञानिक स्तर पर प्रगति के अंतर्गत कुछ वैज्ञानिक आविष्कार तो मानव सभ्यता के लिए लाभदायक सिद्ध हुए परन्तु कुछ परिणाम बहुत ही घातक सिद्ध हुए। संक्रामक बीमारियों से निपटने के लिए नए उपाय खोजे गए। इसी तरह युद्ध के लिए रॉकेट, बमवर्षक विमानों और जेट इंजन का निर्माण के साथ ही रेडार का भी विकास किया गया। युद्ध के समाप्त होने के बाद सभी देश परमाणु हथियारों के निर्माण की दौड़ शुरू हो गई।

इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम व प्रभाव विश्व के इतिहास में मिश्रित रहा।